

जायसी कृत पद्मावत महाकाव्य में विरहानुभूति

Umashankar Ray

M.A Hindi (UGC NET&JRF) Department of Hindi, Lalit Narayan Mithila University, Directorate Of Distance Education-Darbhanga, Bihar

ABSTRACT

मलिक मोहम्मद जायसी निगुर्ण भक्ति काव्यधारा के प्रेमाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। अवधि भाषा में रचित उनका महाकाव्य ''पद्मावत'' सूफी काव्यधारा के प्रतिनिधि ग्रन्थ है। जिसमें चित्तौड़ के राजा रत्नसेन एवं सिंहलद्विप की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम चित्रण के साथ–साथ नागमती का विरह वर्णन भी प्रस्तुत किया गया है। पद्मावत में संयोग वर्णन के साथ हीं वियोग वर्णन भी मिलता है। संयोग की अपेक्षा वियोग वर्णन में कवियों की मनोवृति विशेष रमी है जिसका कारण कदाचित यह है कि बिना दुःख के परमात्मा का साक्षात्कार संभव नहीं हैं। कवि ने नायक और नायिका दोनों की विरह दशा का चित्रण किया है परन्तु उसमें प्रधानता नायिकाओं के विरह की है। वस्तुतः जायसी प्रेम की पीर के कवि हैं। उनका विरह वर्णन अद्विितीय है। उनके हृदय में प्रेम की पीर और विरह वेदना का स्वर मुखर होकर काव्य में मूर्त रूप में हमारे सम्मुख विद्यमान है।

मूल शब्दः विरहव्यथा, सुकुमारता, अलौकिक, सात्विकता, मर्मस्पर्शी, चित्तवृति, संवेदनशील, ऐक्यानुभूति,, अतिश्योक्ति, अन्तर्वेदना, आदि।

प्रस्तावना

जायसी प्रेम एवं वेदना के कवि थे। उनका हृदय प्रेम वेदना से भरा रहता था, वे प्रेम की पीर को अभिव्यक्त करने के लिए व्याकुल रहते थे। उनकी चित्तवृति वियोग वर्णन में अधिक रमी है। उन्होंने अपने काव्य में स्थान–स्थान पर विरह भावना का अत्यंत मर्मस्पर्शी वर्णन किया है जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि मानों जायसी को नारी हृदय प्राप्त था। क्योंकि उनके काव्य में नारी सुलभ कोमलता एवं सुकुमारता काफी अभिव्यक्त हुई है।

राजा रत्नसेन का विरह वर्णनः–

पदमावत में अनेक स्थलों पर राजा रत्नसेन के विरह का अलौकिक चित्रण किया गया हैं। छः स्थलों पर रत्नसेन के विरह का भावपूर्ण चित्रण हुआ है। प्रेम खण्ड में हीरमन तोते द्वारा पदमावती के अलौकिक सौन्दर्य को सुनकर राजा रत्नसेन मूर्च्छित हो जाते है जिसका बड़ा हीं मार्मिक चित्रण कवि ने किया है। इसी तरह राजा गजपति खण्ड, सती खण्ड, पार्वती महेश खण्ड तथा गढ़–छेका खण्ड एवं लक्ष्मी समुन्द्र खण्ड में जायसी ने रत्नसेन के आलौकिक विरह का वर्णन किया है।

पदमावती के विरह का वर्णनः–

राजा रत्नसेन की तरह पदमावती के विरह का वर्णन भी बहुत मार्मिक एवं दिल को छू लेने वाला है। पदमावती के विरह का वर्णन पाँच स्थलों पर हुआ है– वियोग खण्ड, गन्धर्व मैत्री खण्ड, लक्ष्मी समुन्द्र खण्ड, पदमावती नागमती खण्ड एवं पदमावती गोरा–बादल संवाद खण्ड आदि में सभी स्थलों पर अत्यंत मार्मिक वर्णन हुआ है।

नागमती के विरह व्यथा का वर्णनः–

पदमावत महाकाव्य में नागमती के विरह का वर्णन तीन स्थलों पर किया गया है। नागमती वियोग खण्ड, नागमती सन्देश खण्ड तथा पदमावती–नागमती विलाप खण्ड में विरह वेदना का वर्णन अत्यंत हृदय द्रावक है।

बादशाह अलाउदीन की विरह व्यथा का वर्णनः–

पदमावत में बादशाह अलाउदीन के विरह व्यथा का वर्णन भी बड़ा मर्मस्पर्शी है जिसका वर्णन पदमावती रूपचर्चा खंड में मिलता है। राधव चेतन चित्तौड़गढ़ को छोड़ने के बाद बादशाह अलाउदीन के पास पहुंच कर पदमावती के रूप सौंदर्य के बारे में बताते हैं जिसे सुनकर अलाउदीन विरह व्यथित होकर तड़पने लगता है, जिसका सुन्दर वर्णन जायसी ने पदमावत में किया है।

यदपि पद्मावत में अनेक पात्रों का विभिन्न स्थलों पर मर्मस्पर्शी विरह वर्णन किया गया है परन्तु सबसे अधिक नागमति का विरह वर्णन पाठकों को द्रवित करता है, क्योंकि ऐसा मार्मिक वर्णन अन्यत्र नहीं मिलता है। जायसी के विरह वर्णन की अनेक विशेसताए हैं जिसके कारण उन्हें विरह वर्णन का सर्वश्रेश्ठ कवि माना जाता है। निम्नलिखित बिन्दु उनकी विशेसताओं को स्पष्ट करने में सक्षम होगें–

विरह वेदना की अतिशयताः–

पदमावत में विरह का जो स्वरूप अंकित किया गया है, वह अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। नागमती की विरह वेदना का इतना यथार्थ और वास्तविक चित्रण हुआ है कि उसके विरह से प्रकृति तक प्रभावित हुई है। नागमती विरह की अग्नि में जल रही है और उसी विरहाग्नि के धुएँ के कारण भौंरे और कौआ काला बन गया है। वह भौंरे और कौए को दूत बनाकर सन्देश पहुँचाने के लिए कहती है–

''पिऊ सों कहेउ संदेसड़ा हे भौंरा हे काग!
सो धनि विरहे जरि मुई तेहिक धुँआ हम लाग।''

पदमावत में विरह की व्यापकता अतिश्योक्ति के रूप में दिखाई गई है। कहीं–कहीं कवि की अतिशय कल्पना ने कथानक को अविश्व्सनीय बना दिया है। विरह की आग में संपूर्ण पृथ्वी जल उठती है। सृष्टि में कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं है जो इस आग में जल न उठा हो। न केवल मानव बल्कि पशु, पक्षी, सूर्य, आकाश, पताल, स्वर्ग एवं ब्रह्माण्ड सभी विरहाग्नि में जलते नजर आते हैंः–

''विरह की आगि सूर जरि कांपा। राति दिवस जरै ओह तापा।
खिनहि सरग खिन जाई पतारा। थिर न रहै एहि आगि अपारा।''

विरह वेदना की मार्मिकताः–

पद्मावत में केवल विरह ताप का हीं वर्णन नहीं है बल्कि विरहीजनों के पीड़ा एवं कसक की भी मार्मिक अभिव्यक्ति है। नागमती का प्रेम अपने पति के प्रति विरह में प्रगाढ़ हो जाता है। उसकी इतनी हीं इच्छा है कि वह अपने शरीर को विरह ताप में जलाकर भस्म कर देगी और पवन द्वारा उड़ाकर राख के रूप में प्रियतम के आनेवाले पथ पर पड़ी रहेगी। जहाँ उसका प्रियतम अपने चरण रखेगा, इस अभिलाशा का वर्णन करते हुए जायसी लिखते हैः–

''यह तन जारौं छार कै कहौं कि पवन उड़ाव
मकु तेही मारग होई परौ कंत धरै जहाँ पांव।''

विरह वर्णन में सात्विकताः–

पदमावत में विरह निरूपण में भोग विलास की प्रधानता नहीं हैं अपितु सात्विकता की प्रधानता है। पदमावत में सारे पात्र वियोग की आग में जल कर पावन, विनम्र तथा सात्विक बन चुके हैं। उनके मन में गर्व और अहंकार की जगह नहीं है न हीं विषय भोगों के प्रति उनके मन में कोई रूचि है। जिस प्रकार आग में तपकर सोना शुद्ध कुंदन बन जाता है उसी प्रकार नागमति के रजोगुण तथा तमोगुण विरह की आग में जलकर भस्म हो जाते हैं तथा उसमें केवल सतोगुण हीं प्रबल रह जाता है। नागमती सात्विकता की प्रतिमूर्ति बन जाती है। भोग विलास के प्रति उदासीनता का वर्णन करते हुए जायसी कहते है–

''मोहि भोग सौ काज न बारी,
सौह दीठि की चाहत हारी।''

बारहमासे के द्वारा विरह वर्णनः–

जायसी ने बारहमासे द्वारा नागमती के हृदय की वेदना और मार्मिक पीड़ा का चित्रण किया है। भारतीय परंपरा के अनुसार अषाढ़ मास से जायसी का बारहमासा भुरू होता है। इस बारहमासे के अन्तर्गत तीज त्योहारों के माध्यम से नागमती की वेदना का अधिक्य दिखाया गया है। एक ओर जिन बालाओं के पति उनके साथ है, वह कुसुमी (लाल) रंग के वस्त्र पहनकर पति के साथ झूले में झूल रही है तो दूसरी ओर नागमति विरह वेदना से व्याकुल हैः–

''सखिन रचा पिय संग हिंडोला। हरियर भूमी कुसमी चोला।
हिय हिंडोल जस डोले मोरा। विरह झुलाई देह झकझोरा।''

विरह वर्णन में कामदशाओ का समावेषः–

कवि जायसी का विरह वर्णन स्वभाविक तथा मनोवैज्ञानिक ढ़ग से चित्रित हुआ है। इसी कारण इनके विरह वर्णन में सभी कामदशाओ का वर्णन देखने को मिलता है। जिसे साहित्य शास्त्र में अभिलाशा, चिंता, स्मृति, गुण कथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधी, जड़ता आदि नामों से जाना जाता है। नागमती अपने प्रियतम के गुणों का स्मरण करते हुए कहती है–

''कंत कहाँ लागों अहि हियरे''
पंथ अपार, सूझ नहिं नियरे।

प्रकृति के संवेदनशीलता का सुन्दर चित्रणः–

पदमावत में विरह व्यथित पात्रों के साथ–साथ प्रकृति को सहानुभूति व्यक्त करते हुए चित्रित किया गया है। पशु, पक्षी, पेड़–पौधे, लताएँ, फूल आदि सारी प्रकृति विरहीं जनों के प्रति संवेदनशील दिखाई देती है। विरह का घनत्व इतना है कि पक्षी भी विरह की अग्नि में जलने लगते है तथा वृक्ष पत्ते छोड़ने लगते हैं–

''जेहि पंखी के नियर होई कहै विरह की बात।
सोई पंखी जाई जरि तरिवर होई निपात।।''

विरह वर्णन पर फारसी प्रभावः–

जायसी का विरह वर्णन फारसी विरह पद्धति से प्रभावित होने के कारण उसमें कहीं–कहीं विभत्स दृश्यों का चित्रण भी हुआ है। ऐसे स्थलों पर पाठकों को रस और भाव की अनुभूति नहीं होती है। रक्त, मांस आदि के चित्रण से पाठक के मन में घृणा उत्पन्न होती है। जायसी के विरह वर्णन में यह घृणा फारसी प्रभाव के कारण आ गई है।

''कहुकी कहुकी जस कोयल रोई।
रकत–आंसू घुंघंची बन बोई।
जहं जहं ठाढ़ि होई बनवासी।
तहं, तहं होई घुंघंची के रासी।।

निष्कर्ष

पदमावत के विरह प्रसंगों पर विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नागमती का विरह वर्णन हीं पदमावत को 'विरह काव्य' का गौरव दिलाया है, यह साहित्य की अन्यतम विभूति है। यह हिन्दू नारी के विरहिणी जीवन की टीस भरी कहानी है। इसमें नारी हृदय की अन्तर्वेदना की ऐसी व्यापक विवृति पाई जाती है जिसे सुनकर प्रत्येक हृदयधारी क्षण भर के लिए नागमती से ऐक्यानुभूति कर तड़प उठता है। साधारणीकरण की जो स्थिति नागमती के विरह वर्णन में कवि ने उपस्थित कर दिया है, वह अतुलनीय है। यह नारी के हृदय की करूण व्यथा होते हुए भी विश्व मात्र की विरह–व्यथा प्रतीत होती है।

इस प्रकार अध्यात्मिक विरह की साधना में संलग्न सूफी महाकवि जायसी ने लौकिक विरह की ऐसी सरस और संवेदनशील झाँकी सजाई है कि जिसके अनुभव मात्र से हीं अध्यात्मिक विरह के सरस अनुभव की एक अल्की झलक मिल जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. डॉ. नागेन्द्र व डॉ. हरदयाल, ''हिन्दी साहित्य का इतिहास'', पृष्ठ–155–156, मयूर पेपर बैक्स, ए–95, सेक्टर–5, नोयडा–201301, संस्करण–45 वाँ, पुनः मुद्रणः 2013
2. हाजारी प्रसाद द्विवेदी 'जायसी और उनका पदमावत'
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'त्रिवेणी'
4. डॉ. जयदेव ''सूफी महाकवि जायसी'' भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़–1960
5. डॉ. कमल कुलश्रेश्ठ ''हिन्दी प्रेमाख्यान काव्य'' चौधरी मान सिंह प्रकाशन, अजमेर
6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ''जायसी ग्रंथावली'' (मानसरोवर खंड पृष्ठ–65)
7. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ''जायसी ग्रंथावली'' (लक्ष्मी समुन्द्र खण्ड, पृष्ठ–332)
8. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ''जायसी ग्रंथावली, प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली, पृष्ठ–301,303,306,307
9. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ''हिन्दी साहित्य का इतिहास'', पृष्ठ–100
10. मलिक मुहम्मद जायसी 'पदमावत'।